भारत मे निगमीय पर्यावरणीय प्रकटीकरण की नीतिया एवं अभ्यास का अध्ययन

(पेट्रोलियम एवं विद्युत कम्पनियो के विशेष सन्दर्भ मे)

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)

लेखा एवं विधि विभाग की पी-एच.डी. उपाधि हेतु

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

2017

शोध निर्देशिका :
प्रोफेसर निधि शर्मा
लेखा एवं विधि विभाग
वाणिज्य संकाय

शोध छात्र :
गुरू प्रकाश सतसंगी
लेखा एवं विधि विभाग
वाणिज्य संकाय

लेखा एवं विधि विभाग

वाणिज्य संकाय, दयालबाग शिक्षण संस्थान

(डीम्ड विश्वविद्यालय) आगरा

शोध रूपरेखा (SYNOPSIS)

विषय प्रवेश (Introduction)

पर्यावरण का अर्थ एवं परिभाषा : –

पर्यावरण का अंग्रेजी समानार्थी शब्द ''Environment'' है। Environment शब्द फ्रेन्च भाषा के शब्द Environ से बना है, जिसका तात्पर्य चारो ओर के आवरण से है। हिन्दी का पर्यावरण शब्द दो शब्दो की संधि से निर्मित है – परि़ एवं आवरण । जिसका शाब्दिक अर्थ है 'चारो ओर'। हमारे चारो ओर जो कुछ विद्यमान है, हमारे पर्यावरण का अंग है। हमारे चारो ओर वि़द्यमान वनस्पति–जगत,नदियाँ, वायु तथा जीव जन्तु सभी मिलकर हमारे पर्यावरण का निर्माण करते है। जिसमे जैव तत्व तथा अजैव तत्व समूह होते है। जैव तत्व समूह मे वनस्पति, जीव–जन्तु, मानव प्राणी, सूक्ष्म जीव, पर्वत, समुद्र एवं नदी आदि शामिल होते है। अजैव तत्व समूह मे सूर्य, प्रकाश, ऊर्जा, हवा, पानी, धात्विक एवं अधात्विक खनिज आदि शामिल होते है। अतः प्रकृति द्वारा जो कुछ भी हमे निःशुल्क प्राप्त होती है, वे सभी पर्यावरण का अनिवार्य अंग है।

टान्सले के अनुसार, '' पर्यावरण प्रभावकारी दशाओ का योग है, जिसमे जीव रहते है। ''

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 की धारा 2 (क) के अनुसार ''पर्यावरण के अन्तर्गत जल, वायु, भूमि एवं मानव प्राणी, अन्य जीवित प्राणी, पौधे, सूक्ष्म जीवाणु तथा सम्पत्ति और उनके बीच विद्यमान अर्न्तसम्बन्ध सम्मिलित हैं। ''

निगमीय प्रकटीकरण का अर्थ एवं परिभाषा :–

निगमीय प्रकटीकरण का अर्थ कम्पनियो द्वारा वैधानिक औपचारिकता के अर्न्तगत प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अन्त मे प्रस्तुत प्रलेख से होता है। जिसमे कम्पनियो द्वारा एक वित्तीय वर्ष मे हुए सभी लेन–देन एवं घटनाओ का उल्लेख होता है।

निगमीय प्रकटीकरण निम्न रूप में परिभाषित हो सकता है।

''निगमीय प्रकटीकरण कम्पनियो द्वारा प्रकाशित सूचना प्रपत्र होता है जो कि कम्पनियो की वित्तीय विवरणो की संसूचना प्रदान करता है तथा वित्तीय एवं गैर वित्तीय क्रियाओ का वर्णन करता है।''

सफल व्यावसायिक रणनिति मे निगमीय प्रकटीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमे विशिष्ट पणधारी (Stakeholders) के लिए उपयोगी, अर्थपूर्ण एवं वास्तविक संसूचना प्राप्त होती है, जो कि उनके सफल व्यावसायिक निर्णय लेने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। निगमीय प्रकटीकरण के निम्नलिखित लक्षण है।

- विश्वसनीयता
- बोधगम्यता
- सामायिकता
- निष्पक्षता
- रूढ़िवाद
- तुलनीयता
- सामांजस्य

पर्यावरणीय प्रकटीकरण का अर्थ एवं परिभाषा :–

पर्यावरणीय प्रकटीकरण का अर्थ कम्पनियो द्वारा प्रस्तुत पर्यावरण से सम्बन्धित प्रकटीकरण से है। जिसमे कम्पनियो द्वारा उत्सर्जित प्रदूषण को रोकने या कम करने के लिये किये उपायो का उल्लेख होता है।

पर्यावरणीय प्रकटीकरण की परिभाषा निम्न है।

एन. पी. जैन के अनुसार ''पर्यावरणीय प्रकटीकरण, पर्यावरण संरक्षण क्रियाओ और पर्यावरण से सम्बन्धित कारणो का प्रस्तुतिकरण है इसमें जीव मंण्डल का संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन के सतत विकास, क्षयो का दोहन एवं कमी, ऊर्जा का अनूकूलतम उपभोग, जोखिम मे कमी, सुरक्षित उत्पाद एवं सेवाओ का विपणन, नष्ट हुई पर्यावरण की क्षतिपूर्ति करना और इसके निर्धारण एवं वार्षिक अंकेक्षण को शामिल करते है। ''

पर्यावरणीय प्रकटीकरण का महत्व दिन पर दिन बढता जा रहा है तथा पर्यावरणीय प्रकटीकरण, निगमीय प्रकटीकरण का एक महत्वपूर्ण भाग बनता जा रहा है। पर्यावरणीय कार्यक्रम का प्रकटीकरण विशेष रूप से जागरूक निवेशको के लिए निर्णय लेने मे सहायक होता है। स्कन्ध विनिमय मे नियमित अधिकांश कम्पनिया पर्यावरण सम्बन्धित अपने प्रयासो व खर्चो को प्रभावी रुप से अपनी वार्षिक प्रतिवेदन मे प्रकट कर रही है।

पर्यावरणीय लेखांकन का अर्थ एवं परिभाषा :–

1. पी. धार के अनुसार ''पर्यावरणीय लेखांकन एक विधि है जिससे बढती हुई पर्यावरण चुनौतियो एवं अवसरो की मान्यताओ में सुधार हो सकता है। इसके द्वारा आन्तरिक और बाह्य पर्यावरण लागतो की पहचान करने और इन सभी लागतो को विशेष उत्पाद या प्रकियाओ मे आबंटित करने की संसूचना प्राप्त होती है।''

2 डब्ल्यू. डोटकोस के अनुसार ''प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण और पुनःनिर्माण सम्बन्धित लेखांकन ही पर्यावरणीय लेखांकन है।''

पर्यावरणीय प्रतिवेदन का दायित्व, वित्तीय लेखांकन विवरण के प्रमाप संख्या 5 ''आकस्मिक व्यव का लेखा'' मे अन्तर्निहित है। प्रमाप के अनुसार यदि पर्यावरण सम्बन्धित हानि की राशि या संभावित हानि की राशि का तर्कयुक्त निर्धारण हो सके अथवा न हो सके तथापि इस हानि को अवश्य पादटिप्पणी मे प्रस्तुत करना चाहिए। भावी पर्यावरण लागतो को तब तक केवल पादटिप्पणी के रूप मे प्रस्तुत करना चाहिए जब तक कि वह मौदिक रूप मे निर्धारण योग्य न हो जाये।

पर्यावरणीय प्रकटीकरण की अनिवार्यता :– पर्यावरण लागत की बढोत्त्तरी तथा पर्यावरण के निरंतर हानि और अवनति के परिप्रेक्ष्य मे बढती पणधारी (Stakeholders) की जागरूकता के कारण पर्यावरणीय प्रकटीकरण का महत्व बढता जा रहा है। पर्यावरणीय प्रकटीकरण, पणधारी (Stakeholders) को कम्पनियो की पर्यावरण लागत एवं संरक्षण के उद्देश्यो को प्रस्तुत करती है।

एक कम्पनी, पर्यावरणीय प्रकटीकरण की सहायता से पर्यावरण निवेश के व्यय से सम्बन्धित परिशुद्ध एवं विश्वसनीय समंक प्राप्त कर सकती है। जो उसे वर्तमान एवं भविष्य के लिए श्रेष्ठतर तर्कयुक्त निर्णयन व विश्लेषण मे सहायक होते है। ड़्योग विभिन्न प्रकार के अपने उत्पादन, प्रक्रियाओ, अनुसंधान विकास मे प्राकृतिक संसाधन को कच्चे माल के रूप मे उपभोग करती है। अतः ड़्योगो का उत्त्तरदायित्व है कि वह अपनी पर्यावरणीय प्रकटीकरण अभ्यास का स्पष्ट रूप से प्रकटीकरण प्रस्तुत करे।

भारत में पर्यावरणीय प्रकटीकरण विनियमन : –

सन् 1976 मे भारतीय संसद द्वारा संविधान का 42वाँ संशोधन पारित किया जिसके अन्तर्गत दो नवीन अनुच्छेद जोङ गये।

अनुच्छेद 48क के अनुसार " राज्य, पर्यावरण संरक्षण तथा सुधार के लिए, देश मे वन तथा वन्य जीवन के संरक्षण तथा सुधार के लिए प्रयत्न करेगा ''।

भारत का संविधान के निति निदेशक सिद्धांत 51क अनुच्छेद के अनुसार, भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह– ''प्राकृतिक पर्यावरण की; जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव भी है रक्षा करे, उनका संवर्द्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे ''

सन् 1980 में भारत देश मे स्वस्थ पर्यावरण को बनाने के लिए पर्यावरण विभाग की स्थापना की गई थी। इसके बाद पर्यावरण एवं वन मंत्रालय बना। 19 नवम्बर 1986 भारत के संविधान के अनुच्छेद 253 के अन्तर्गत पर्यावरण संरक्षण अधिनियम को शामिल किया गया। इसका लक्ष्य पर्यावरण का संरक्षण एवं संर्वद्धन और मानव जाति, जीवित प्राणी पौधो एवं सम्पत्ति की सुरक्षा करना है।

भारतीय कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 की उपधारा (4) मे निगमीय सामाजिक उत्त्तरदायित्व (CSR) उद्देश्यो के अन्तर्गत यह प्रावधान है कि भारतीय कम्पनिया पर्यावरण संरक्षण के विषय मे अपने निर्णयो का प्रकटीकरण प्रस्तुत करेगी।

साहित्यिक पुनर्निरीक्षण

(Review of Literatures)

पर्यावरणीय प्रकटीकरण के क्षेत्र मे उपलब्ध साहित्य सिमित है, इन अध्यनो मे से कुछ नीचे घटते हुए क्रम मे दिये जा रहे है।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन (International Studies)

क्र. सं	शीर्षक	लेखक	वर्ष	अध्ययन का उद्‌देश्य	अध्ययन का निष्कर्ष
1.	ग्रीन एकाउण्टिंग एण्डं रिर्पोटिंग प्रैक्टिस अमंग इंडियन कॉरपोरेट	डॉ मनीमल एम.सी. एण्डं डॉ मकेश के. जी.	2014	प्रस्तुत प्रपत्र मे भारतीय कम्पनियो द्वारा अपनाये पर्यावरण के प्रमुख्य मापदंडो जाँच की गई है जिनका उपयोग पर्यावरणीय प्रतिवेदन अभ्यास के अंग के रूप मे करते है।	निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि कम्पनियो द्वारा पर्यावरणीय प्रतिवेदन को छः विशिष्ट मापदंडो मे विभाजित किया गया है ।
2.	कॉरपोरेट एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंगः द इस्यू ,इटस प्रैक्टिस एण्डं चैलेन्जेस : अ स्टडी ऑन इंडियन कॉरपोरेट एकाउण्टिंग प्रैक्टिस	मनोज गोस्वामी	2014	प्रस्तुत अध्ययन मे निगमीय स्तर पर पर्यावरणीय लेखांकन तथा इससे सम्बन्धित समस्याओ के समाधान का वर्णन करना है।	प्रस्तुत अध्ययन से पता चलता है कि निगमीय स्तर पर पर्यावरणीय प्रतिवेदन मे तुलना एवं सत्यापन का अभाव है जो कि लेखांकन की आधारभूत विशेषता है।
3.	कन्स्ट्रेन्ट इन पब्लिक एन्वायरमेण्टल इक्स्पेडिन्चर अनैलिसिस इन फिलिपीन गर्वनमेन्ट	रूफो आर. मेनडोजा	2013	यह प्रपत्र जलवायु एवं पर्यावरण सम्बन्धित विकास का प्रबन्ध एवं मितव्ययी निर्णय पर प्रभाव का उल्लेख करता है।	इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि सरकार की प्राकृतिक संसाधनो के खर्चों में सहयोग प्रदान कर रही है।

4.	द इम्पैक्ट ऑफ एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग एण्डं रिर्पोटिंग ऑन आर्गनजैशनल पर्फामेन्स ऑफ सलेक्टेड ऑयल एण्डं गैस कम्पनी इन नाइजर डेल्टा रीजन ऑफ नाइजीरिया	बस्सीय इयों बसीय, सन्डे. ओ. इफ्फीक, ओकन ई. ईटन	2013	प्रस्तुत शोध प्रपत्र मे यह निर्धारण किया गया है कि पर्यावरण लागत फर्मो के लाभदायकता को कैसे प्रभावित करती हैं	इस शोधपत्र मे निष्कर्ष है कि पर्यावरण सम्बन्धी लागत प्रबन्ध फर्मो की लाभदायकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
5.	एन्वायरमेण्टल मैनेजमेण्ट एण्डं रेग्युलेशन पिटफालँस ऑफ एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग	एनरिको ब्रेक्की लौरा मारनं	2013	यह प्रपत्र पर्यावरण प्रबंधन और उनके लेखांकन प्रथाओ के बारे मे जानकारी देती है तथा उससे सम्बन्धित काउंटर साक्ष्यो का वर्णन करती है।	वित्तीय प्रतिवेदनो मे लागतो को कई वर्गा मे विभाजित किया गया तथा पर्यावरण लागत को अलग प्रस्तुत किया है।
6.	एन्वायरमेण्टल डिस्कलोजर प्रैक्टिस बॉय कम्पनी इन इंडिया : अ स्टडी ऑफ निफ्टी कम्पनी	सोनिया कुन्दरा	2013	प्रस्तुत अध्ययन मे हरित पहल के विषय मे प्रकटीकरण की मदो का कम्पनियो के अनुसार विश्लेषण करना है।	इस शोध प्रप़त्र का निष्कर्ष है कि हरित पहल के फलस्वरूप कर्मचारियो की कार्यकुशलता मे त्रीव विकास होता है एवं भावी परिचालन व्ययो मे कमी होती है तथा इससे स्वच्छ एवं स्वस्थ कार्य वातावरण बनता है।
7.	एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग एण्डं रिर्पोटिंग इन द फासंल फ्यूल सेक्टर : अ स्टडी ऑन बांग्लादेश ऑयल गैस एण्डं मिनलर कॉरपोरेशन (पट्रोबांग्ला)	सुदिप्ता बोस	2012	प्रस्तुत अध्ययन इस ओर ध्यान आर्कषित करता है कि बाग्लादेश की अर्थव्यवस्था मे अनेक नये पर्यावरण एवं ऊर्जा सम्बन्धित कार्यक्रम को कैसे प्रेरित करते है।	इस अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि पर्यावरणीय लेखांकन एवं प्रतिवेदन एक उभरती हुई अवधारणा है यधपि विश्व के कई विकसित तथा विकासशील देश अपने जीवाश्म ईधन के क्षेत्र में पर्यावरणीय लेखांकन एवं प्रकटीकरण करते है।
8.	द कान्सक्वेन्स ऑफ मैन्डटॉरी कॉरपोरेट सस्टैनबिलिटी रिर्पोटिंग एविडेन्स फ्रम फॉर फोर कन्ट्री	सेराफेम जार्ज	2011	प्रस्तुत शोधप्रपत्र का उद्देश्य फर्मो पर वैधानिक निगमीय सतत विकास एवं प्रतिवेदन के प्रभावो की जाँच करना है।	इस शोधप्रपत्र का निष्कर्ष हैं कि इस विधि एवं विनियमन को अपनाने के बाद प्रशिक्षित कर्मचारियो के बढने से ऊर्जा समूह की तरह क्षय एवं पानी उपभोग मे सकारात्मक रूप मे कम हुआ है।

9.	प्रलिमनेरी इन्साईट ऑन सस्टैनबिलिटी रिर्पोटिंग एण्डं एश्योरेन्स प्रैक्टिस इन मलेशिया	यस्सरी स्वानी मुस्तफा, मोहम्मद जैन	2010	इस प्रपत्र का ध्येय मलेशिया मे सतत विकास प्रतिवेदन के विकास एवं स्थिरता का परीक्षण करना एवं वर्तमान पर्यावरणीय प्रतिवेदन करने की प्रवृति के जागरूकता स्तर की जाँच करना है।	इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि सतत विकास प्रकटीकरण प्रतिवेदन से सम्बन्धित अधिक से अधिक संसूचना वार्षिक प्रतिवेदन के साथ एकीकृत की गई है । प्रकटीकरण कम प्रचलित होने का कारण पणधारी का जागरूकता एवं विधायी दबाब का अभाव है।
10.	एन्ग्रेजिंग विथ ऑर्गनजैशन पर्सूट ऑफ इम्प्रूवड सस्टैनबिलिटी एकाउण्टिंग एण्डं पर्फामेन्स	क्रेल एडम्स कालासं	2008	इस प्रपत्र का उद्देश्य सतत विकास निष्पादन का संतुलित करने का दावा करने वाले के संगठनो के नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लेखांकन अनुसंधान के उत्तरदायित्व प्रबन्ध का वर्णन करना है।	इस शोध पत्र मे निष्कर्ष रूप मे ज्ञात होता है कि संगठनो मे सतत लेखांकन प्रतिवेदन मे पर्यावरणीय प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।
11.	कॉरपोरेट सोशल रिस्पान्सबिलिटी इन कान्टेस्ट : द केस फॉर कम्पलसरी सस्टैनबिलिटी डिस्क्लोशर फॉर लिस्टेड पब्लिक कम्पनी इन ऑस्ट्रेल्य	जुलिटा ओवर लैण्ड	2007	प्रस्तुत शोध प्रपत्र का उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में पर्यावरण के सतत प्रकटीकरण की आवश्यकता के लिए सूचीबद्ध सार्वजनिक कम्पनियो का विश्लेषण करना है।	इस अध्ययन सूचीबद्ध सार्वजनिक कम्पनियो के उत्पादन क्रियाओ से प्रभावित पर्यावरण से सम्बन्धित प्रकटीकरण की ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया गया है।
12.	ऑस्ट्रेल्यन कॉरपोरेट एन्वायरमेण्टल रिर्पोटिंग कम्पेरेटिव अनैलिसिस डिस्क्लोजर प्रैक्टिस अ कॉस वालेन्टरी एण्डं मैन्डटॉरी डिस्क्लोजर सिस्टम	स्टेसी कोवान	2005	प्रस्तुत शोधप्रपत्र ऑस्ट्रेलिया कम्पनिया का पर्यावरणीय प्रकटीकरण क्षेत्र का परीक्षण वार्षिक प्रतिवेदन मे प्रकटीकरण अभ्यास का वर्णन है।	प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष है कि ऑस्ट्रेलिया के सूचीबद्ध कम्पनियो में अधिकतर पर्यावरणीय प्रकटीकरण सम्बन्धित संसूचना वार्षिक प्रतिवेदन के स्वैच्छिक वर्गो मे प्रस्तुत है तथा ये कम्पनिया सकारात्मक पर्यावरणीय प्रकटीकरण प्रस्तुत करते है।

राष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन

(National Studies)

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक	वर्ष	अध्ययन का उद्देश्य	अध्ययन का निष्कर्ष
13.	एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग ऑफ महारत्न कम्पनी	आलोक कुमार	2015	प्रस्तुत शोध प्रपत्र मे उद्देश्य महारत्न कम्पनियो मे पर्यावरणीय लेखांकन के स्तर तथा निगमीय पर्यावरणीय प्रकटीकरण का विस्तार एंव प्रतिवेदन अभ्यास का वर्णन है	शोधप्रपत्र का निष्कर्ष है कि महारत्न कम्पनिया पर्यावरण निष्पादन मे प्रत्यक्ष हानि पहुचाने वाले तथ्यो को अपने वार्षिक प्रतिवेदन मे प्रदर्शित कर रही है
14.	कॉरपोरेट डिस्क्लोजर ऑफ इन्टैनजबल ए कम्पैरटिव स्टडी प्रैक्टिस अमंग इडियन, अमेरिकन एण्डं जैपेनीस कम्पनी	डॉ रागिनी	2013	इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय, अमेरिका एवं जापान की उच्च सौ कम्पनियो के प्रकटीकरण के अभ्यास का परीक्षण एवं तुलना है।	यह परिणाम पाया गया है कि भारतीय, अमेरिका और जापान देशों में सम्पूर्ण प्रकटीकरण स्कोर में महत्वपूर्ण सुधार हुआ

प्रस्तावित शोध अध्ययन के महत्व

(Significance of Proposed Research Study)

पर्यावरण विषय जन सम्बन्ध मे एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। पर्यावरणीय प्रकटीकरण, इस सम्बन्ध मे उद्योगो का प्रकटीकरण विषय का महत्वपूर्ण भाग बन गया है। एक सफल निर्णय, निर्णायक की उपलब्ध उत्कृष्टता और सफल कूटनीति का परिणाम होती है। चयनित कम्पनिया अपने कच्चे माल के लिये पूर्णतः पर्यावरण पर निर्भर है। चयनित कम्पनिया, जो पर्यावरण के प्रति अति संवेदनशील है, के पर्यावरणीय प्रकटीकरण पर कोई शोध नही हुआ है। अतः चयनित कम्पनियो द्वारा अपनायी गयी पर्यावरणीय प्रकटीकरण के अभ्यास का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

पर्यावरणीय प्रकटीकरण पर उपलब्ध वर्तमान साहित्यिक सामग्री से प्रमाणित होता है। कि पर्यावरण प्रकटीकरण अभ्यास तीव्रगति पर हो रहा है। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक इस क्षेत्र मे कम शोध हुए है तथा उपलब्ध साहित्यिक सामग्री से ज्ञात होता है, कि भारतीय कम्पनियो द्वारा पर्यावरणीय सूचनाओ का वर्णनात्मक प्रकृति मे प्रकटीकरण का हो रहा है, और वह निर्णायक को बहुत लाभदायक सिद्ध नही हो रहा है। अतः परिमाणात्मक पध्दति मे पर्यावरण प्रतिवेदन के अध्ययन की आवश्यकता है।

यह अध्ययन चयनित कम्पनियो द्वारा पर्यावरणीय नितियो को समझने मे सहायक होगी। प्रस्तावित शोध अध्ययन प्रबन्धकीय एवं विनियोग सम्बन्धित निर्णय लेने मे भी उपयोगी होगा।

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्य

(Objective Proposed of Research Study)

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. चयनित कम्पनियो के पर्यावरणीय प्रकटीकरण सम्बन्धित विधिक रूपरेखा का अध्ययन करना।
2. चयनित कम्पनियो द्वारा पर्यावरणीय प्रकटीकरण की नितिया एवं अभ्यास का परीक्षण तथा तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. चयनित कम्पनियो के पणधारी (Stakeholders) का पर्यावरणीय प्रकटीकरण प्रतिवेदन के प्रति अवबोधन का परीक्षण करना।
4. पर्यावरणीय प्रतिवेदन को अधिक उपयोगी बनाने के लिये एक प्रभावी रूपरेखा तैयार करना।

प्रस्तावित शोध अध्ययन की कार्यविधि

(Methodology of the Proposed Research Study)

अध्ययन का क्षेत्र (Scope of Study) :– यह अध्ययन भारत के सी.एन.एक्स. ऊर्जा क्षेत्र पर होगा।

प्रतिदर्श (Sample Size) :– सी.एन.एक्स. ऊर्जा क्षेत्र सूची मे पेट्रोल, गैस और विद्युत से सम्बन्धित कम्पनिया सम्मिलित है। इस सूची मे भारतीय राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेन्ज (National Stock Exchange) मे दस कम्पनिया सूचीबद्ध है, सी.एन.एक्स. ऊर्जा क्षेत्र की कम्पनिया निम्नलिखित है।

क.स.	कम्पनी का नाम
1.	रिलायंन्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड
2	ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड
3	पॉवर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
4	नेशनल थर्मल पॉवर कॉरपोरेशन लिमिटेड
5	भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड
6	गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड
7	टाटा पॉवर लिमिटेड
8	केर्न इंडिया लिमिटेड
9	इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड
10	रिलायंन्स पॉवर लिमिटेड
	स्त्रोत: www.nseindia.com दिनांकः 30 सितम्बर 2015

चयनित प्रतिदर्श का न्यायोचित

(Justification of Sample Size)

1. ये सभी कम्पनिया राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेन्ज (National Stock Exchange) के अन्तर्गत सी.एन.एक्स. ऊर्जा सूची क्षेत्र में सूचीबद्ध है।
2. जहाँ तक पर्यावरण सम्बन्ध है, ये सभी कम्पनिया अति संवेदनशील है।
3. ये सभी कम्पनिया पर्यावरणीय मुद्दो को प्रस्तुत कर रहे है।

संमक का संग्रहण (Data Collection)

समंक के प्रकार (Types of Data)

समंक का संग्रहण प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो समंक स्त्रोतो से होगा।

प्राथमिक समंक (Primrary Data) :– प्राथमिक समंक का संग्रहण चयनित कम्पनियो के 100 पणधारी (Stakeholders) से प्रश्नावली भरावा कर किया जायेगा।

द्वितीय समंक (Secondary Data) :– द्वितीय समंक का संग्रहण चयनित कम्पनियो के वार्षिक प्रतिवेदन एवं सतत विकास प्रतिवेदन, जर्नल ऑफ इंडियन ऑयल न्यूज, जर्नल ऑफ मिनिस्ट्री ऑफ पेट्रोलियम एवं अन्य सम्बन्धित जर्नल, समाचार पत्र, सरकारी अधिकरणो द्वारा जारी दिशा–निर्देश एवं पर्यावरण संरक्षण अधिनियम आदि से किया जायेगा।

समंकों का विश्लेषण यन्त्र (Tools For Data Analysis) :– समंक का विश्लेषण एवं निर्वचन साख्यिकी के यन्त्रो से पूर्ण होगा जो निम्नवत है :– जाँच सूची (Check-list), प्रतिशतता (Percentage), समान्तर माध्य (Mean), काई–वर्ग परीक्षण (Chi-Squre), टी–टेस्ट (t-test) ,सहसम्बन्ध (Correlation) एवं अन्तर्वस्तु विश्लेषण (Content Analysis)आदि।

प्रस्तुतीकरण यन्त्र (Presentation Tools) :– रेखाचित्र (Graphs), चित्रमय प्रदर्शन (Diagrammatic Representation) एवं सारणीयन (Tabulation) आदि।

प्रस्तावित शोध अध्ययन की शोध प्राक्कल्पना
(Research Hypothesis of Proposed Research Study)

प्रस्तुत शोध प्रस्ताव की शोध प्राक्कल्पना निम्नलिखित है।

शून्य प्राक्कल्पना (H_0^1) निगमीय पर्यावरणीय प्रकटीकरण अभ्यास का चयनित कम्पनियो मे कोई सार्थक अन्तर नही है ।

शून्य प्राक्कल्पना (H_0^2) वर्तमान पणधारी (Stakeholders) के मध्य चयनित कम्पनियो मे निगमीय पर्यावरणीय प्रकटीकरण अभ्यास के प्रति सार्थक जागरूकता नही है।

प्रस्तावित शोध अध्ययन की अवधि
(Period of Proposed Research Study)

प्रस्तावित शोध अध्ययन में 2011–2012 से 2015–2016 तक (5 वर्षो) के प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन तथा सतत विकास प्रतिवेदन मे संकलित समंक का अध्ययन किया जायेगा।

उद्देश्यों को प्राप्त करने की रूपरेखा

(Proposed Action Plan to Achieve Objectives)

उद्देश्य	उद्देश्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया
चयनित कम्पनियो के पर्यावरणीय प्रकटीकरण सम्बन्धित विधिक रूपरेखा का अध्ययन करना।	भारत मे पर्यावरण संरक्षण अधिनियम और सरकारी अधिकरणो द्वारा जारी अनिवार्य एवं एच्छिक नियमो तथा दिशा निर्देशो के अध्ययन द्वारा
चयनित कम्पनियो का पर्यावरणीय प्रकटीकरण की नितिया एवं अभ्यास का परीक्षण तथा तुलनात्मक विश्लेषण करना।	जाँच सूची (Check-List) तैयार करके, प्रतिशतता (Percentage) , समान्तर माध्य (Mean) तथा टी–टेस्ट (t-test) द्वारा
चयनित कम्पनियो के पणधारी (Stake holders) का पर्यावरणीय प्रतिवेदन के प्रति अवबोधन का परीक्षण करना।	काई–वर्ग (Chi-Squre Test) परीक्षण के द्वारा
निगमीय पर्यावरणीय प्रतिवेदन को अधिक उपयोगी बनाने के लिये एक प्रभावी रूपरेखा तैयार करना	शोध के निष्कर्ष के आधार पर

प्रस्तावित शोध अध्ययन की विषय सूची

(Contents of Proposed Research Study)

प्रथम अध्याय	विषय प्रवेश
	पर्यावरण का अर्थ एवं परिभाषा
	पर्यावरणीय लेखांकन का अर्थ एवं परिभाषा
	पर्यावरणीय प्रकटीकरण का अर्थ एवं परिभाषा
	भारत मे पर्यावरणीय प्रकटीकरण विनियमन
	चयनित कम्पनियो का एक परिचय
द्वितीय अध्याय	साहित्यिक पुनर्निरीक्षण (Review of Literatures)
तृतीय अध्याय	चयनित कम्पनियो द्वारा पर्यावरणीय प्रकटीकरण की नितिया एवं अभ्यास का परीक्षण तथा तुलनात्मक अध्ययन करना।
चर्तुथ अध्याय	चयनित कम्पनियो के पणधारी (Stakeholders) का पर्यावरणीय प्रकटीकरण प्रतिवेदन के प्रति अवबोधन का परीक्षण करना।
पंचम अध्याय	विश्लेषण एवं परिणाम
षष्ठ अध्याय	निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion and Suggestion)

`

सन्दर्भ (References) :

बस्सीय, इ. बी., इफीक, ओ. एस., एण्डं इटन, इ. ओ. (2013) .'द इम्पैक्ट ऑफ एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग एण्डं रिर्पोटिंग ऑन ऑर्गनजैशनल पर्फामिन्स ऑफ सलेक्टेड ऑयल एण्डं गैस कम्पनी इन नाइजर डेल्टा रीजन ऑफ नाइजीरिया. रिर्सच जर्नल ऑफ फ्रीयनेन्स एण्डं एकाउण्टिंग, 4(3) , 57–73.

बोस,एस. (2012) . एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग एण्डं रिर्पोटिंग इन द फोसिंल फ्यूल सेक्टर : अ स्टडी ऑन बांग्लादेश ऑयल गैस एण्डं मिनलर कॉरपोरेशन (पट्रोबांग्ला).द कॉस्ट एण्डं मैनेजमेण्ट, 34(2) , 53–67.

क्रेल, ए. (2008) . एन्ग्रेजिंग विथ ऑर्गनजैशन पर्सूट ऑफ इम्प्रूवड सस्टैनबिलिटी एकाउण्टिंग एण्डं पर्फामिन्स. एकाउण्टिंग ऑडिटिंग एण्डं एकाउण्टएबलिटी जर्नल, 333–355.

कोवान, एस., एण्डं गेडेन्नी, डीं. (2005) . ऑस्ट्रेल्यन कॉरपारेट एन्वायरमेण्टल कम्पेरेटिव अनैलिसिस डिस्क्लोशर प्रैक्टिस अ कॉस वालेन्टरी एण्डं मैन्डटॉरी सिस्टम. जर्नल ऑफ एकाउण्टिंग एण्डं ऑर्गनजैशनल चेन्ज, 1 (2), 165–179.

गोस्वामी,एम. (2014) . कॉरपोरेट एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग : द इस्यू, इटस प्रैक्टिस एण्डं चैलेन्जेस : अ स्टडी ऑन इंडियन कॉरपोरेट एकाउण्टिंग प्रैक्टिस. जर्नल ऑफ बिजनेस एण्डं मैनेजमेण्ट, 16(5), 36–42.

जुलिटी, ओ. (2007) . कॉरपोरेट सोशल रिस्पान्सबिलिटी इन कान्टेस्ट : द केस फॉर कम्पलसरी सस्टैनबिलिटी डिस्क्लोजर फॉर लिस्टेड पब्लिक कम्पनी इन ऑस्ट्रेल्य. मैक्यूरिय लॉ र्वकिंग पेपर न0. 2007, 1–22.

कुमार, ए. (2015) . एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग ऑफ महारत्न कम्पनी. द मैनेजमेण्ट एकाउण्टेण्ड जर्नल, 50(12), 20–26.

कुन्दरा, एस. (2013) . एन्वायरमेण्टल डिस्कलोजर प्रैक्टिस बॉय कम्पनी इन इंडिया : अ स्टडी ऑफ निफ्टी कम्पनी. पैसिफीक बिजनेस रिव्यूव इन्टरनेशनल, 6(2), 66–73.

लोननीस, एल., एण्डं सेराफ्रीयम, जी. (2014) . द कान्सक्वेन्स मैन्डटॉरी कॉरपारेट सस्टैनबिलिटी रिर्पोटिंग एविडेन्स फ्रम फॉर फोर कन्ट्री. स्ट्रैटजिक मैनेजमेण्ट जर्नल, 1–35.

मरानं, एल., एण्डं ब्रेक्की, इ. (2013) . एन्वायरमेण्टल मैनेजमेण्ट एण्ड रेग्युलेशन पिटफालँस ऑफ एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग . द मैनेजमेण्ट ऑफ एन्वायरमेण्टल क्वॉलिटी, 24(4), 538–554.

मिनीमल, एम.सी., एण्डं माकेश, के. जी. (2014) . ग्रीन एकाउण्टिंग एण्डं रिर्पोटिंग प्रैक्टिस अंमग इंडियन कॉरपोरेट. एशिया पैसिफीक जर्नल ऑफ रिसर्च, 1(14) , 21–35.

मेनडोजा, आर. आर. (2013) . कन्स्ट्रेन्ट इन पब्लिक एन्वायरमेण्टल इक्स्पेडिन्चर अनैलिसिस इन फिलिपीन गर्वन्मेन्ट. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिर्सच, 81–93.

रागिनी (2012) . कॉरपारेट डिस्क्लोजर ऑफ इन्टैनजबल अ कम्पैरटिव स्टडी प्रैक्टिस अमंग इंडियन, अमेरिकन एण्ड जैपेनीस कम्पनी. विकल्प इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेण्ट अहमदाबाद, 6(2), 51–60.

स्वानी, वाई. एण्डं जैन, एम.एम. (2010) . प्रिलिमनेरी इन्साईट ऑन सस्टैनबिलिटी रिर्पोटिंग एण्डं एश्योरेन्स प्रैक्टिस इन मलेशिया, सोशल रिस्पान्सबिलिटी जर्नल, 6 (4), 627–645.

सन्दर्भ ग्रंन्थ (Bibliography) :

ब्रेडर, एस. (2006) . एन्वायरमेण्टल प्रिन्सीपलस एण्डं पॉलिसी : एन इन्टरडिस्सीप्रीनरी इन्ट्रोडकशन.

जैन, एन. पी. (2002) . एन्वायरमेण्टल रिर्पोटिंग एण्डं ऑडिटिंग. जयपुर : राज पब्लिकेशन हाऊस.

लाल, जे. (1989) . एकाउण्टिंग थ्योरी : किताब महल.

प्रमानिक, ए. के. (2008) . कॉरपारेट एन्वायरमेण्टल एकाउण्टिंग एण्डं रिपोटिंग. न्यू दिल्ली : दीप एण्डं दीप प्राइवेट लिमिटेड.

प्रसाद, ए. (2015) . एन्वायरमेण्टल लॉ : इलाहाबाद सेन्टल लॉ पब्लिकेशन्स.

गुरू प्रकाश सतसंगी
(शोध छात्र)

प्रोफेसर निधि शर्मा,
(शोध निर्देशिका)
लेखा एवं विधि विभाग
वाणिज्य संकाय

प्रोफेसर प्रमोद कुमार
लेखा एवं विधि विभागाध्यक्ष
वाणिज्य संकाय

प्रोफेसर सत्य प्रकाश कौशिक
वाणिज्य संकाय अध्यक्ष
वाणिज्य संकाय